साहित्योत्सव
Festival of Letters
24 - 29 फ़रवरी 2020

दैनिक समाचार बुलेटिन

रविवार, 01 मार्च 2020

पुस्तक प्रकाशन समाज कल्याण की दृष्टि से हो– गोविंद प्रसाद शर्मा

'भारत में प्रकाशन की स्थिति' पर आयोजित परिचर्चा का उद्घाटन राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अध्यक्ष गोविंद प्रसाद शर्मा ने किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने साहित्यिक पुस्तकों की घटती बिक्री पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसा कई कारणों से हो रहा है, लेकिन प्रमुख कारण है कि हम विद्यालय स्तर पर बच्चों में साहित्य पढ़ने की रुचि विकसित नहीं कर पा रहे हैं। पुस्तकों को आम जन-जीवन से जोड़ने की चुनौती आज प्रमुख है। इसके लिए लेखकों को भी आगे आकर पाठकों को खोजना होगा। एक अन्य कारण के रूप में उन्होंने पुस्तकों के मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया पर भी सवाल उठाए। उन्होंने प्रकाशकों से अनुरोध किया कि वे पुस्तक प्रकाशन को समाज के कल्याण की दृष्टि से देखें।

सत्र के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी लगभग 150-200 नई पुस्तकें प्रतिवर्ष प्रकाशित करती है और लगभग 300 पुस्तकों का पुनर्मुद्रण करती है, लेकिन हम भी पुस्तकों की बिक्री में लगातार गिरावट देख रहे हैं। हमें इस चुनौती से मिलकर लड़ना होगा। इसी संदर्भ में इस परिचर्चा का आयोजन किया गया है, जिससे हम एक दूसरे से यह जान सकें कि इस समस्या का निदान कैसे हो सकता है।

प्रथम विचार सत्र निर्मल कांति भट्टाचार्जी के संयोजन में संपन्न हुआ और उसमें कार्तिका वी.के., अदिति माहेश्वरी, प्रीति शिनॉय और पारमिता सत्पथी ने भाग लिया। कार्तिका वी.के. ने कथा साहित्य की वर्तमान प्रकाशन स्थिति पर बात करते हुए कहा कि युवा पीढ़ी की प्राथमिकता में अब किताबें नहीं हैं। हमें नए लेखकों के साथ-साथ नए पाठकों की भी ज़रूरत है और इसके लिए दोनों के बीच एक संवाद ज़रूरी है। उन्होंने अनुवाद की बढ़ती संख्या पर प्रसन्नता ज़ाहिर करते हुए कहा कि अब यह केवल अंग्रेज़ी से नहीं, बल्कि कई क्षेत्रीय भाषाओं से किया जा रहा है। वाणी प्रकाशन का प्रतिनिधित्व कर रही अदिति माहेश्वरी ने कहा कि दूसरे देशों की तरह हमारे देश में भी इस क्षेत्र में सरकारी सहयोग की आवश्यकता है। जीएसटी के चलते प्रकाशन उद्योग प्रभावित हुआ है। प्रीति शिनॉय ने कहा कि लेखकों को भी पाठकों की वर्तमान रुचि का ध्यान रखते हुए कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि लेखकों को अपने साहित्य का प्रचार-प्रसार का सारा ज़िम्मा सिर्फ़ प्रकाशकों पर ही नहीं छोड़ देना चाहिए, बल्कि अगर वे स्वयं भी इसमें प्रकाशकों का बिना संकोच किए सहयोग करेंगे तो निश्चित रूप से सार्थक परिणाम दिखेंगे, और उन्होंने अपने बेस्टसेलर लेखक की छवि को प्रमाण के रूप में ध्यान में रखने की अपेक्षा की।

ओड़िआ लेखिका पारमिता सत्पथी ने कहा कि ओड़िआ लेखकों और अनुवादकों को रॉयल्टी देते वक़्त भी प्रकाशकों को जीएसटी देना पड़ता है,

जिसका प्रभाव प्रकाशन पर पड़ता है, और प्रकाशक यह राशि लेखक और अनुवादक की रॉयल्टी से ले लेते हैं, यह चिंतनीय है। अपने वक्तव्य में निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने कहा कि पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन में भी यदि साहित्यिक प्रकाशकों से सहयोग लिया जाए तो इस क्षेत्र में आ रही गिरावट को रोका जा सकता है। उन्होंने भारतीय भाषाओं के अनुवाद को ज़्यादा प्रकाशित करने की अपील की।

द्वितीय विचार सत्र प्रख्यात कवि अरुण कमल के संयोजन में संपन्न हुआ, जिसमें आलोक श्रीवास्तव एवं अरुंधति सुब्रमण्यम ने कविता प्रकाशन की वर्तमान स्थिति पर बातचीत की। आलोक श्रीवास्तव ने कविता के महत्त्व पर टिप्पणी करते हुए कहा कि कविता जीवन और समाज की ज़रूरत है और यह हमेशा बनी रहेगी। कविता पुस्तकों की निरंतर माँग यह प्रदर्शित करती है कि हमारा समाज अभी जीवित है। अरुंधति सुब्रमण्यम ने कहा कि सोशल मीडिया के प्रति बढ़ती रुचि के कारण लेखकों/कवियों ने दूसरों की रचनाएँ पढ़ना बंद कर दिया है, जो कि चिंताजनक है। सत्र के संयोजक अरुण कमल ने कहा कि कविता हाल के वर्षों में ज़्यादा लोकतांत्रिक हुई है। कोई भी समाज तभी तक जीवित रहेगा जब तक उसके लोग कविता लिखते और पढ़ते रहेंगे। उन्होंने मलयाळम्, मराठी एवं बाङ्ला में कविता की अच्छी बिक्री का उल्लेख करते हुए कहा कि पंजाबी, उर्दू एवं ओड़िआ में कविता की बिक्री कम हुई है। अंत में श्रोताओं द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब भी प्रतिभागियों द्वारा दिए गए। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

नई फ़सल : अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन

'साहित्योत्सव' के अंतर्गत अंतिम दिन 'नई फ़सल : अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन प्रख्यात कन्नड साहित्यकार सिद्धलिंगैया द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने अकादेमी द्वारा युवा लेखकों के लिए चलाई जा रही विभिन्न गतिविधियों के लिए अकादेमी की प्रशंसा की तथा युवाओं से इसका भरपूर लाभ उठाने की अपील की। विशिष्ट अतिथि प्रख्यात असमिया लेखक ध्रुवज्योति बोरा ने कहा कि आज की बदलती परिस्थितियों में सभी युवा लेखकों को नए, बेहतर और कल्याणकारी समाज के निर्माण और उसके पक्ष में खड़ा होने की ज़रूरत है। उन्होंने भारतीय समाज की बहुसांस्कृतिकी और बहुलतावादी प्रवृत्ति को बनाए रखने के लिए युवा लेखकों को आंदोलनकर्मी की भूमिका निभाने के लिए तैयार रहने का आह्वान किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अपनी युवावस्था के दिनों का ज़िक्र करते हुए कहा कि पहचान और उससे जुड़ना किसी भी युवा लेखक के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है। प्रारंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा युवा लेखकों के लिए चलाई जा रही यात्रा अनुदान, नवोदय योजना, युवा पुरस्कार, मुलाकात/युवा साहिती आदि कार्यक्रम योजनाओं के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

सम्मिलन का प्रथम सत्र 'मैं क्यों लिखता/ लिखती हूँ ?' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात मलयाळम् कथाकार के.पी. रामनुन्नी ने की। इस सत्र में लक्ष्यजित बोरा (असमिया), किंजल जोशी (गुजराती), प्रियंका मिश्रा (मैथिली), मंदाकिनी भट्टाचार्य (अंग्रेज़ी) और श्रीजित पेरुमथचन ने अपनी सृजनात्मकता की प्रेरणा और प्रभावों पर चर्चा की। लक्ष्यजित ने दो कविताओं के माध्यम से अपनी रचनात्मकता के कारणों को बताया। किंजल जोशी ने कहा कि साहित्य मेरा प्रयोजनरहित प्रेम है। प्रियंका मिश्रा ने कहा कि वे स्वयं से साक्षात्कार और समय से संवाद के लिए लिखती हैं। मंदाकिनी भट्टाचार्य ने कहा कि कविता उनके लिए व्यक्तिगत जुनून की जगह सामूहिक यात्रा है। श्रीजित पेरुमथचन ने कहा कि मैं स्वयं की खोज में लिखता हूँ। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में के.पी. रामनुन्नी ने कला के प्रयोजन संबंधी पारंपरिक सवालों और विमर्शों को संदर्भित करते हुए अपनी बात रखी।

द्वितीय सत्र 'लेखन : व्यवसाय या जुनून' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात ओड़िआ लेखक गौरहरि दास ने की। इस सत्र में मूनिसा असलम दरवेश (कश्मीरी), रिमी मुतसुद्दी (बाङ्ला) और जी. अखिला (अंग्रेज़ी) ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी वक्ताओं ने देश-विदेश के महान लेखकों/विचारकों की उक्तियों को संदर्भित करते हुए अपनी प्रस्तुतियाँ दीं और कहा कि लेखन केवल और केवल जुनून ही हो सकता है, व्यवसाय कदापि नहीं, एक ऐसा जुनून जो लेखक के ऊपर आजीवन तारी रहता है।

तृतीय सत्र 'मैं और मेरी पीढ़ी का साहित्य' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात बाङ्ला कथाकार रामकुमार मुखोपाध्याय ने की। इस सत्र में नागराज हेत्तुरु (कन्नड), तोंगब्रम अमरजीत सिंह (मणिपुरी) और अंबेश तलवडकर (कोंकणी) ने अपनी-अपनी भाषाओं के समकालीन युवा लेखन परिदृश्य पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में रामकुमार मुखोपाध्याय ने पठित आलेखों पर टिप्पणी करते हुए कहा कि इन तीन लेखकों के विचारों के माध्यम से हमने प्रायः संपूर्ण भारतीय लेखन के परिदृश्य में परिचय प्राप्त कर लिया है, क्योंकि ये लेखक भारत के तीन कोनों से आए हैं।

चतुर्थ सत्र कहानी-पाठ को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता प्रकाश भातंब्रेकर ने की। इस सत्र में श्रीरोद बिहारी बिस्वाल (ओड़िआ), सरोज बाला (डोगरी) तथा रोशनी रोहड़ा (सिंधी) ने अपनी कहानियों का पाठ हिंदी अनुवाद में किया, जिनके शीर्षक क्रमशः "आदत", "आधुनिक सोचों वाला पिता" तथा "दावत" था। मानुषी (तमिळ्) तथा इंडला चंद्रशेखर (तेलुगु) ने अपनी कहानियों का पाठ अंग्रेज़ी अनुवाद में किया, जिनके शीर्षक क्रमशः "मदर्स लव" तथा "टोबैको सीजन" था। प्रकाश भातंब्रेकर ने युवा लेखकों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं।

सम्मिलन का पंचम एवं अंतिम सत्र कविता-पाठ का था, जो प्रख्यात उर्दू शायर शीन काफ़ निज़ाम की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में मिहिर चित्रे (अंग्रेज़ी), राजकुमार मिश्र (संस्कृत), स्वप्निल शेळके (मराठी), रीना मेनारिया (राजस्थानी), रोशन राई (नेपाली), महेंद्र कुमार (उर्दू), चंद्रमोहन किस्कू (संताली) एवं मधु राघवेंद्र (अंग्रेज़ी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कविता-पाठ मूल भाषा के साथ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद में हुए। शीन काफ़ निज़ाम ने पठित कविताओं पर संक्षिप्त टिप्पणी के साथ अपनी कविताएँ भी सुनाईं। सम्मिलन के सत्रों का संचालन अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश द्वारा किया गया तथा अंत में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव के धन्यवाद ज्ञापन के साथ साहित्योत्सव संपन्न हुआ।

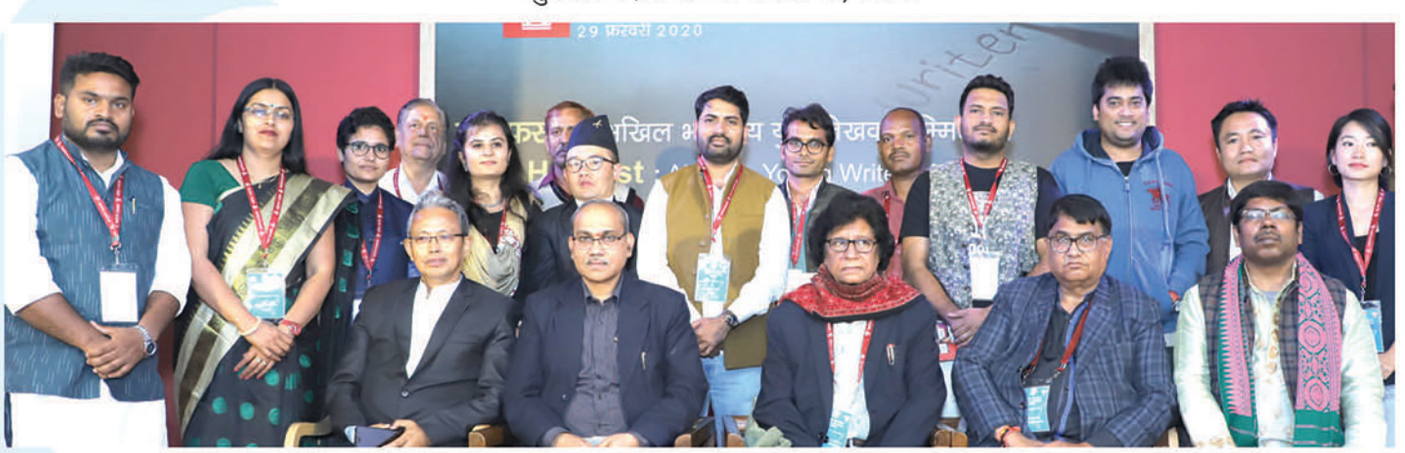

'प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

'प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के अष्टम सत्र की अध्यक्षता के. सच्चिदानंदन ने की। इस सत्र में मेल्विन रॉड्रिग्ज़, मोगळ्ळी गणेश, बलवंत जानी और अश्वनी कुमार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

के. सच्चिदानंदन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि कोई भी साहित्य अपने विशिष्ट परिवेश से अलग नहीं होता जहाँ वह जन्म लेता है। यदि उस क्षेत्र विशेष के साहित्य में वहाँ की स्थानीय विशिष्टता नहीं दीखती तो फिर लेखक की सृजनशीलता को प्रश्नांकित किया जाना चाहिए। मेल्विन रॉड्रिग्ज़ ने कहा कि कवियों और प्रकृति के बीच का संबंध अत्यधिक जैविक है। कोंकणी कविता में प्रकृति के अनगिनत रूपक हैं, जिनका बुद्धिमता से उपयोग लोगों के दृष्टिकोण, नारी शक्ति, आध्यात्मिक आवश्यकताओं, संस्कृति, सामाजिक जागरूकता आदि को दर्शाने के लिए किया जाता है।

मोगळ्ळी गणेश ने कहा कि कविता मानव-निर्मित किंतु पर्यावरण से उत्पन्न रचना होती है। प्रकृति में कवियों की कल्पनात्मक जड़ें हैं। रचनात्मकता के लिए आवश्यक वृत्ति, सभी प्रकार की सहवर्ती भावनाएँ, काव्यात्मक सृजन से जुड़े व्यवहार आदि कविताओं के परिवेश और सामाजिक अनुभवों से उत्पन्न होते हैं। कवि की कल्पना में मानव जाति के अनुभव और विकासवादी स्मृतियों के संयोजन की गहरी संवेदनशीलता शामिल होती है। बलवंत जानी ने अपने वक्तव्य में यह गहरी चिंता व्यक्त की कि प्रकृति लगातार हमें विनाश के संकेत दे रही है लेकिन हम जाने क्यों उन गंभीर संकेतों को समझना ही नहीं चाह रहे हैं, इसके घातक परिणाम होंगे।

आज के दूसरे सत्र की अध्यक्षता महेंद्र कुमार मिश्र ने की, जिसमें ए. चेल्लपेरुमाल, कलाचंद महाली, शिवदास बास्के एवं अनिल कुमार तिरिया ने अपने आलेख पढ़े। महेंद्र कुमार मिश्र ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में विभिन्न उदाहरणों द्वारा प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य के संबंधों पर अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने कहा कि वही साहित्य अब तक लंबी कालावधि के बावजूद बचा रह सका है जिसमें लोक की साँसें दर्ज हैं, आमजन के राग-विराग-उल्लास और संघर्ष की गाथाएँ धड़कती

हैं। ए. चेल्लपेरुमाल ने अपने सुचिंतित आलेख में इस बात को रेखांकित किया कि पर्यावरण और साहित्य का अद्‌भुत सामंजस्य उस जगह, उस क्षेत्र से देखने को मिलता है जिसमें वह साहित्य रचा गया है और वहाँ का विशिष्ट परिवेश उसे प्रभावित करता है। कलाचंद महाली ने कहा कि प्राचीनकाल से देसी लोग वन क्षेत्रों में निवास कर रहे हैं। उन्होंने अपनी आजीविका बनाए रखने के लिए ज्ञान अर्जित किया। शनैः शनैः चेतना ने उनकी दक्षता को विशेषज्ञता तक पहुँचाया। महाली आदिवासी लोग इसका एक उपयुक्त उदाहरण हैं।

शिवदास बास्के ने कहा कि ''जाहेर थान'' की अवधारणा संताल लोगों द्वारा एक नया गाँव स्थापित करने की है, ''कुलही दुरुप'' का अर्थ है उस विशेष गाँव की सर्वोत्तम उपजाऊ भूमि के टुकड़े का पता लगाना, जहाँ सभी प्रकार के पौधे उगाए जा सकें तथा उन्हें ''जाहेर थान'' के लिए चुना जा सके। शब्द जाहेर की उत्पत्ति ''जाह'' (फल) तथा ''एर'' अर्थात् बीजों को फैलाना, दूसरे शब्दों में जाहेर को एक ऐसी भूमि का टुकड़ा भी कहा जा सकता है जिसमें समस्त प्रकार के पौधों के बीजों को उगाया जा सके या प्राकृतिक रूप से वहाँ पर वह उपलब्ध हों। ''थान'' का अर्थ है पूजा स्थल। जैव-संरक्षण पर देसी लोगों की इस पारंपरिक अवधारणा और ज्ञान को इसके संरक्षण तथा जटिल मुद्दों को हल करने के लिए संभावित उपकरण के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

अनिल कुमार तिरिया ने कहा कि उनका आलेख इकोस्प्रिच्युएलेटी को पुनः परिभाषित करने का प्रयास है तथा कोल्हन में 'हो' जनजाति के देशौली जीवन, विद्या और पहचान की खोज करता है। यह रिवाज़ों, परंपराओं, संस्कृति, धर्म, रीति-रिवाज़ों और पवित्र उपदेशों में अनंत पैतृक आत्माओं देशौली और जाहेर बुरी की पूजा करने की मान्यताओं का वर्णन करने का प्रयास है। 'हो' समुदाय में देशौली के साथ जीवन शुरू और समाप्त होता है। देशौली निःसंदेह 'हो' जनजाति समुदाय का जीवन एवं उनकी पहचान है।

संगोष्ठी के अंतिम सत्र की अध्यक्षता जी. मधुसूदनन् ने की। 'पारिस्थितिक सौंदर्यशास्त्र और आलोचना : नियम एवं चलन' विषयक इस सत्र में धनंजय सिंह, जतिंद्र कुमार नायक, ओम द्विवेदी एवं रोहित मनचंदा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। जी. मधुसूदनन् ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में तमाम वैश्विक संकटों का कारण पर्यावरण और प्रकृति के दोहन को मानते हुए कहा कि यदि हम जल्दी नहीं सम्हले तो बहुत देर हो जाएगी। उन्होंने पारिस्थितिक सौंदर्यशास्त्र और आलोचना के कई प्रतिमानों पर भी साहित्य को परखने की कोशिश की। धनंजय सिंह ने कहा कि वैयाकरण-दार्शनिक भर्तृहरि (5वीं शताब्दी ई.पू.) ने प्राकृतिक वस्तुओं को संदर्भित किया ताकि वे भाषायी प्रतीकवाद के अपने सिद्धांत को विकसित कर सकें। वह शब्द और अर्थ के बीच के रिश्ते को समझने वाले पहले दार्शनिक हैं। ध्वनि और स्फोट (शब्द-आयात) के भेद को विस्तार से समझाने के लिए उन्होंने जल निकायों में चंद्रमा के प्रतिबिंब की एक समानता को नियोजित करके बताया। ओम द्विवेदी ने पर्यावरणीय आपदाओं का सामना करने के लिए ज़िम्मेदारी हेतु शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि इस भयावह आपदा का मुक़ाबला करने के लिए निवारक उपायों को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब कोई पृथ्वी पर भावी जीवन के लिए अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास करे। जतिंद्र कुमार नायक और रोहित मनचंदा ने अपने वक्तव्यों में प्रकृति के व्यापक स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साहित्य ही है जो पर्यावरण की बहु छवियों को प्रभावशाली तरीके से व्यक्त कर लोगों के मन में प्रकृति के प्रति प्रेम जगा सकता है। कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रिय सचिव कृष्णा किंबहुने ने किया।

बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियाँ आयोजित

बच्चों के लिए विशेष रूप से आयोजित कार्यक्रम 'आओ कहानी बुनें' के अंतर्गत कहानी एवं कविता तथा चित्रांकन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कविता एवं कहानी प्रतियोगिता का विषय पर्यावरण पर केंद्रित था, जिसे कनिष्ठ और वरिष्ठ वर्गों में बाँटा गया था। प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों से आए लगभग 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता अंग्रेज़ी एवं हिंदी भाषा में आयोजित की गई थी। प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार बच्चों को दिए गए। बच्चों को दीपा अग्रवाल एवं मधु पंत ने अंग्रेज़ी एवं हिंदी में रोचक कहानियाँ भी सुनाईं। बच्चों ने चित्रकला प्रतियोगिता में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के उपसचिव एन. सुरेश बाबू ने किया।

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001
ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
दूरभाष : 011-23386626/27/28, फ़ैक्स : 011-23382428
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in